2 फरवरी 2016, कुल पृष्ठ : 4, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 21 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

हमारी रीति-नीति

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल
(कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का अभ्युदय इस कलिकाल में आत्मार्थियों के लिये किसी अद्भुत वरदान से कम नहीं।

समयसार का उद्घाटन गहन तत्त्व का प्ररूपण, निरंतर आत्मचिंतन, पठन और पाठन; यह है हमें पूज्य गुरुदेवश्री का प्रदेय।

हम उनकी मशाल को थामकर ही आगे बढ रहे हैं।

वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रति हमारी गहरी आस्था एवं सम्पूर्ण समर्पण है एवं उसी का प्रचार और प्रसार हमारा एकमात्र उद्देश्य, हमारी मान्यता है कि यही एकमात्र मार्ग है जो इस भगवान आत्मा को भवभ्रमण के अभिशाप से मुक्ति दिलाकर सिद्धशिला तक पहुंचाने में सक्षम है, यही वह कार्य है जिसे करने में इस जीवन की सफलता है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट आत्मार्थियों की वह अनूठी संस्था है जो पिछले 49 वर्षों से सतत गहन तत्त्वप्रचार के काम में संलग्न है।

अनकों अवरोध आये पर हम अटके नहीं।
अनेकों भुलावे आये मगर हम भटके नहीं।
अनेक दबाव आये पर हम झुके नहीं।
अनेक प्रलोभन मिले पर हम बिके नहीं।
अनकों विपत्तियाँ आयी पर हम टूटे नहीं।
उकसाने के अनेक प्रयास हुये पर हम रूठे नहीं।

जिस उद्देश्य को लेकर, जिस रीति-नीति के साथ हम प्रारम्भ हुये थे, आज तक उसी पर कायम हैं और सदा रहेंगे।

हम थोड़े से लोग साथ चले थे, लोग जुड़ते गये, कारवाँ बढता गया।

बहुत लोग जुड़े, कुछ बिछुड़े और कुछ भटक भी गये; पर हम जैसे थे वैसे ही रहे, अपने पथ पर बढते रहे। समाज में करने को अन्य और भी काम बहुत हैं, कुछ बहुत आवश्यक भी हैं और बहुत अच्छे भी पर **हमने जो काम अपने हाथ में लिया है वह अनूठा है।**

अनेकों सुझाव, दबाव, आदेश और प्रलोभन आते रहे कि हम कुछ और काम अपने हाथ में लें, अन्य गतिविधियों से भी जुड़ें, पर हम उनसे पृथक ही बने रहे। इसलिये नहीं कि वे काम करने योग्य नहीं हैं, पर इसलिये कि अन्य अनेकों लोग तो वह काम कर ही रहे हैं।

हमने जो अनूठा काम अपने हाथ में लिया है वह अनुपम है और अन्य बहुत लोग उस काम में नहीं लगे हैं। आज तो फिर भी और कुछ लोग और कुछ संस्थायें इसमें जुड़ी हैं पर जब हमने शुरुआत की थी तब तो हम अकेले ही थे।

हमारा संकल्प है कि हम इस मार्ग से च्युत नहीं होंगे।

हालांकि यह काम सर्वोत्कृष्ट है तथापि आलोचनायें भी होती हैं, विरोध भी होता है, प्रतिरोध भी होता है और अवरोध भी आते हैं।

हमारी नीति रही है कि हम इन सबसे प्रभावित नहीं होते हैं, हम रुकते नहीं, हम अटकते नहीं, हम भटकते नहीं।

हम किसी वाद-विवाद में नहीं पड़ते हैं। मात्र हमारा काम ही उन सबके लिये हमारा जवाब है, हम सदा इसी नीति पर कायम रहेंगे।

विवादों में न उलझना हमारी कमजोरी नहीं, हमारी शक्ति का प्रतीक है।

अपने कार्य करते रहना हमारी वीरता है और उससे विचलित नहीं होना हमारी धीरता।

आत्मकल्याण और तत्त्वप्रचार के कार्य में संलग्न सभी लोग भगवान आत्मा हैं और निकट भव्य हैं, किसी से शत्रुता करना या किसी के प्रति द्वेष पालना या द्वेषपूर्ण व्यवहार करना न तो हमारी वृत्ति है और न ही हमारी नीति, हम सदा इसी नीति पर कायम रहेंगे।

हमारी दृढ मान्यता है कि -

आत्मकल्याण विशुद्ध व्यक्तिगत मामला है, इस मामले में किसी अन्य का किसी से सरोकार नहीं हो सकता है।

दार्शनिक मान्यतायें सबका अपना-अपना व्यक्तिगत अधिकार है, इनका प्रभाव लोकोत्तर है, इनका संबंध भव के अभाव से है, इनमें दखलंदाजी करना किसी का अधिकार नहीं हो सकता है, उसमें किसी का दखल नहीं होना चाहिये। इन विषयों में हम कभी किसी का दबाव और दखल स्वीकार नहीं करते हैं।

धार्मिक परम्परायें, उपासना-पद्धति और पूजा-अर्चना की विधि सबके अपने-अपने सोच और विश्वास पर निर्भर करती हैं, उनमें किसी भी स्तर पर बाहरी दबाव उचित नहीं है। इन विषयों में न तो हम किसी पर जोर जबरदस्ती करते हैं और न ही किसी की जोर जबरदस्ती स्वीकार करते हैं। **हम चाहते हैं कि सब लोग अपने-अपने स्थानों पर प्रचलित पद्धति के अनुसार अपनी आस्था और विश्वास के अनुरूप पूजा-उपासना के लिये स्वतंत्र रहें।**

सामाजिक मनुष्य मात्र की आवश्यकता है और हम सभी आत्मार्थियों की भी सभी तरह की सामाजिक आवश्यकतायें हैं, **सामाजिक एकता और अखंडता में हमारा दृढ विश्वास है, हम किसी भी तरह के विग्रह में विश्वास नहीं करते, न तो दार्शनिक आस्थाओं के आधार पर और न ही दार्शनिक आस्थाओं की कीमत पर। न ही उपासना पद्धति के आधार पर या किसी अन्य सामाजिक रीति रिवाजों के आधार पर। उक्त सभी विषयों को अपनी-अपनी जगह कायम रखते हुये, बिना किसी शर्त, दबाव और बलप्रयोग के समाजिक एकता और अखंडता में हमारी गहरी आस्था है।**

हम कभी भी किसी भी सामाजिक विग्रह के कारण नहीं बनेंगे और सदा ही बिना शर्त सामाजिक एकता के लिये कार्य करते रहेंगे।

हम अब तक भी अपनी रीति-नीतियों पर दृढतापूर्वक चले हैं और अपने सिद्धांतों से समझौता किये बिना सामाजिक एकता कायम रखने में और उसके विकास में सफल रहे हैं और आगे भी ऐसा ही करते रहेंगे।

आत्मोत्थान और तत्त्वप्रचार के इस अभियान में अकेले ही बहुत कुछ कर पाना भी संभव नहीं था, पूज्य गुरुदेवश्री का वरदहस्त तो हमारे ऊपर था ही, हमारी इस लम्बी यात्रा में हमारी उक्त रीति-नीति से सहमति रखने वाले बहुत से महानुभावों का यथायोग्य

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय -

ज्ञान और सुदर्शन की साधु संगति

- पण्डित रतनचंद भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जहाँ जिनदर्शन का सहज लाभ मिल रहा हो, उसे भला कौन छोड़ना चाहेगा। जिनालय में सुदर्शन और ज्ञान दोनों उससमय मौजूद थे; क्योंकि अभी-अभी प्रवचन समाप्त हुआ ही था। दोनों ने भक्तिभाव से साधुओं की वंदना की और अपने भाग्य को सराहा। वर्षाऋतु में मुनिराजों के दर्शन होने से उन्हें निश्चय हो गया था कि साधुसंघ ने यहीं-कहीं आसपास ही अपना वर्षायोग स्थापित करने का निश्चय किया है। आहार लेकर साधुसंघ के सभी साधु एक-एक करके वन की ओर चले गये। ज्ञान और सुदर्शन भी उनके चरण-चिह्नों का अनुसरण करते हुये उस वन में पहुँच गये, जहाँ मुनिसंघ ठहरा था।

उनके पहुँचने तक संघ के सभी साधु सामायिक करने बैठ गये। ज्ञान और सुदर्शन न केवल दर्शन करने आये थे, वे संघ के आचार्यश्री से प्रतिदिन प्रवचन और तत्त्वचर्चा करने का निवेदन भी करना चाहते थे। अत: वे सामायिक से उठने तक की प्रतीक्षा में वहीं बैठ गये।

पुण्यात्माओं के मनोरथ कभी निरर्थक नहीं जाते। ज्ञान और सुदर्शन मंदिर में आज ही चर्चा कर रहे थे कि यदि इस वर्ष किसी साधुसंघ का वर्षायोग इस नगर के आसपास कहीं हो जावे तो कितना अच्छा रहे। सो घंटेभर बाद ही जिनमंदिर में साधुसंघ के दर्शन हो गये।

दूसरे उनकी यह भावना हुई कि - ''काश! इस संघ के आचार्य कोई विशिष्ट ज्ञानी हो और उनके सत्समागम का पूरा लाभ हम सबको मिले। किसी के कहने से तो कोई साधु प्रवचन देते नहीं हैं, फिर भी कहना तो चाहिये ही। संभव है करुणा आ जावे हम पर।''

संयोग से आचार्यश्री ने सामायिक से उठते ही सब शिष्यों को बुलाकर सूचित किया कि कल प्रात:काल से प्रवचन प्रारंभ होगा। यह खुशखबरी सुनकर ज्ञान, विज्ञान भारी हर्षित हुये; क्योंकि बिना कहे ही उनका मनोरथ पूरा हो गया। वे खुश होते हुये घर चले गये और उन्होंने कल से होने वाले प्रवचनों की सूचना घर-घर भिजवा दी।

पहला दिन था इस कारण आज ज्ञान, विज्ञान और सुदर्शन को बातों-बातों में प्रवचन में पहुँचने में कुछ देर हो गई थी, प्रवचन प्रारम्भ हो चुका था। आचार्यश्री कह रहे थे कि - ''संस्कारों की तो बात ही निराली है। देखो न! चिड़ियों को ऐसे सुविधासम्पन्न और सभी तरह के सुरक्षा साधनों से युक्त घोंसला बनाने का प्रशिक्षण कौन देता है? मधुमक्खियों को फूलों का रस एकत्रित कर मधु बनाने और सुरक्षित रहने के लिये मोमयुक्त वातानुकूलित छत्ता बनाने का प्रशिक्षण कौन देता है? चींटियों को सामूहिक रूप से संगठित होकर अन्नकण इकट्ठा करने की शिक्षा कहाँ से मिलती है? पशुओं को जन्मते ही पानी में तैरना किसने सिखाया? और जाने ऐसे कितने विचारणीय प्रश्न हैं जो हमारे पुनर्जन्म और पूर्व के संस्कारों को सिद्ध करते हैं।

ये सब उनके जन्म-जन्मान्तर और वंश परम्परागत संस्कारों के ही सुपरिणाम हो सकते हैं जो उन्हें अपनी पूर्व की पीढी-दर-पीढी से मिलते आ रहे हैं।

संस्कार दो तरह से प्राप्त होते हैं - एक वंश परम्परागत पूर्व पीढियों से और दूसरे जीव के पूर्वभवों से अर्थात् एक देह की पीढी से और दूसरे आत्मा की पीढी से।''

वंश परम्परागत संस्कारों को स्पष्ट करते हुये आचार्यदेव ने अपने प्रवचन में एक किंवदन्ती का उल्लेख करते हुये कहा - ''कुसंस्कारों का कुप्रभाव भी कहाँ तक हो सकता है, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

एक थी जेबकतरी, जो जेब काटने में बहुत कुशल थी। उसे इस बात का गर्व था कि उसे कोई जेब काटते हुये पकड़ नहीं सकता।

मान तो रावण का भी नहीं रहा, सो चोरों की तो बात ही क्या है? एक दिन जब वह जेब काटते हुये रंगे हाथों पकड़ी गई तो उसे तो पकड़ने वाले की होशियारी पर आश्चर्य हुआ ही, साथ ही जिसकी जेब काटी गई थी, उसे भी भारी आश्चर्य हुआ; क्योंकि वह भी अपने को अब तक एक अद्वितीय जेबकट माने बैठा था। उस दिन उसका भी गर्व गल गया, जब उसने जेबकतरी के हाथ की सफाई को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखा।

दोनों एक-दूसरे से प्रभावित तो हुये ही, आँखों ही आँखों में दोनों का व्यवहार भी प्रेमालाप में बदल गया। जेबकतरे ने जेबकतरी का हाथ तो पकड़ ही रखा था और गुणों का मिलान भी बिना ब्राह्मण के मिलाये ही मिल गया। दोनों एक नम्बर के जेबकट जो थे, अत: उनका वह हाथ का पकड़ना ही 'हथलेवा' हो गया, पाणिग्रहण-संस्कार में बदल गया। दोनों मिलकर वही अपनी पुश्तैनी धंधा करने लगे।

(क्रमश:)

टिकिट बुक करावें

ट्रेन के टिकिट 4 माह पहले बुक होते हैं, इसलिये आगामी 15 मई से 1 जून तक विदिशा (म.प्र.) में आयोजित होने वाले 50वें स्वर्ण जयन्ती आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर में जो भाई-बहिन आना चाहते हैं, वे अपने टिकिट तत्काल बुक करा लेवें; क्योंकि इनकी बुकिंग खुल गई है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

आशीर्वाद मिला, सहयोग मिला, सेवायें मिलीं और अनुमोदन मिला।

जिनवाणी के प्रवक्ताओं, वक्ताओं और शिक्षकों का समाज पर असीम उपकार है और तत्त्वप्रचार का यह महान कार्य सिर्फ उन्हीं के समर्पण का प्रतिफल है, वे ही हमारी शक्ति हैं और वे ही हमारे विश्वास के केन्द्र बिन्दु। प्रत्येक व्यक्ति का नामोल्लेख तो संभव नहीं पर हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं।

हमारी कार्यकर्ताओं की बड़ी टीम के वे सभी सदस्य (हमारे कार्यालय में कार्यरत सदस्य) जिनका जीवन ही इस सबके प्रति समर्पित है या यूं कहिये कि यही उनका जीवन है वे इस संस्था की रीढ की हड्डी हैं, जिन्होंने सदा परदे के पीछे रहकर ही काम किया है, उन्होंने न तो तकलीफों की परवाह की और न ही शाबासी की चाह रखी, उनका योगदान हमें सदा ही अविस्मरणीय रहेगा।

आइये हम सभी इस अभियान को दीर्घजीवी बनाने का संकल्प लें।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ पंचकल्याणक की नौवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 6 से 10 जनवरी 2016 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन, प्रश्नमंच तथा सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त पण्डित रजनीभाई दोशी द्वारा प्रात: व दोपहर समयसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित नीलेशभाई मेहता द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त प्रात: प्रवचनोपरान्त पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा जैन सिद्धांत प्रवेशिका पर तथा सायंकाल गुणस्थान विवेचन पर कक्षा ली गई। शिविर के अंतिम दो दिन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर द्वारा भी प्रवचन हुये।

शिविर का शुभारंभ सभा के मुख्य अतिथि श्री बी.डी. जैन परिवार द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। शिविर का उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या परिवार इन्दौर द्वारा हुआ। मंच पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित मांगीलालजी, श्री जवेरचंदजी हताया, श्री देवीलालजी, श्री नवीनभाई मेहता, श्री भरतभाई लाखाणी, श्री योगेशजी जैन मुम्बई, श्री किरणभाई गाला, डॉ. उमेशजी संघोई एवं श्री सुनीलजी जैन वाशिम मंचासीन थे। स्वागत भाषण श्री महीपालजी ज्ञायक ने दिया। सभा का संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

प्रतिदिन दोपहर में छात्र विद्वान प्रवचन के उपरांत विविध विषयों पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रथम दिन श्रद्धा-भक्ति व वैराग्य, द्वितीय दिन देव-शास्त्र-गुरु, तृतीय दिन निमित्तोपादान एवं चतुर्थ दिन सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक् चारित्र विषय पर ध्रुवधाम के विद्यार्थियों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। गोष्ठी की अध्यक्षता क्रमश: पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित मांगीलालजी मुम्बई, पण्डित चंदुभाई बांसवाड़ा एवं श्री मीठालालजी कलिंजरा ने की तथा मंगलाचरण शिखर जैन, विपिन जैन एवं जीवेश जैन ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन एवं संचालन पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

शिविर के दौरान ध्रुवधाम कैलेण्डर तथा सर्वोदय अहिंसा अभियान के अन्तर्गत 'पतंग उड़ाने से हानि' संबंधी पोस्टर का विमोचन भी किया गया। अंतिम दिन समापन समारोह में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महीपालजी ज्ञायक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कण्ठपाठ प्रतियोगितायें संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 जनवरी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत बारह भावना की कण्ठपाठ प्रतियोगिता संपन्न हुई, जिसमें प्रथम स्थान ऋषभ जैन दिल्ली व जिनेन्द्र जैन बमनौरा (शास्त्री द्वितीय वर्ष), द्वितीय स्थान रमन जैन मौ एवं तृतीय स्थान संदीप जैन अमरमऊ (शास्त्री द्वितीय वर्ष) व विनम्र जैन बड़ागांव (उपाध्याय कनिष्ठ) ने प्राप्त किया।

प्रतियोगिता में पुरस्कार के रूप में क्रमश: 800, 600 एवं 400 रुपये प्रदान किये गये। कार्यक्रम के निर्णायक पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, श्री कैलाशचंदजी सेठी एवं पण्डित उदयजी शास्त्री थे।

यह प्रतियोगिता प्रतिवर्ष आयोजित करने हेतु श्री अशोकजी जैन मण्डमा (कर्नाटक) ने 55 हजार रुपये ध्रुवफण्ड में प्रदान किये हैं। उपरोक्त पुरस्कार इसी योजनान्तर्गत प्रदान किये गये।

इसी प्रकार दिनांक 15 जनवरी को समयसार प्रश्नोत्तर कण्ठपाठ प्रतियोगिता संपन्न हुई, जिसमें प्रथम स्थान पर ऋषभ जैन दिल्ली, चर्चित जैन खनियांधाना (शास्त्री द्वितीय वर्ष), द्वितीय स्थान पर रमन जैन मौ व अर्पित जैन ललितपुर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं तृतीय स्थान पर संदीप जैन अमरमऊ (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

इस प्रतियोगिता में पुरस्कार के रूप में क्रमश: 1000, 800 एवं 600 रुपये प्रदान किये गये। प्रतियोगिता के निर्णायक पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील एवं डॉ.दीपकजी जैन वैद्य थे।

- जिनकुमार शास्त्री

सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

पिड़ावा (राज.) : यहाँ दिनांक 1 से 9 जनवरी तक सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित आदित्यजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित रीतेशजी शास्त्री, पण्डित उर्वीशजी शास्त्री आदि स्थानीय विद्वानों द्वारा संपन्न हुये।

पार्श्वनाथ विधान संपन्न

जयुपर (राज.) : यहाँ अतिशय क्षेत्र चूलगिरि पर राजस्थान नमेचू जैन सभा द्वारा नववर्ष स्नेह मिलन समारोह दिनांक 10 जनवरी को आयोजित हुआ, जिसमें पार्श्वनाथ विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम में लगभग 300-350 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस अवसर पर राज.नमेचू जैन सभा की परिवार परिचय पुस्तिका का विमोचन भी हुआ।

विधि-विधान के कार्य डॉ. संजीवजी के निर्देशन में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित पंकजजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 से 17 फरवरी	गुना (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
18 फरवरी	मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.)	प्रवचन
22 से 24 फरवरी	उदयपुर-त्रिकालवर्ती जिनालय	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
30 मार्च से 6 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल के माध्यम से रतनलाल सौगानी ट्रस्ट द्वारा श्री महावीर स्वामी समवशरण जिनमंदिर की वेदी प्रतिष्ठा का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 8 से 10 जनवरी तक श्री भक्तामर महामंडल विधान सहित सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में दिल्ली, अहमदाबाद, हैदराबाद, इन्दौर, छिन्दवाड़ा, विदिशा आदि अनेक स्थानों से लगभग 700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा कराये गये।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

अभाना-दमोह (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रथम बार आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन दिनांक 19 से 26 जनवरी तक किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं ब्र. नन्हे भैया सागर के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में आसपास के स्थानों से लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित अशोकजी उज्जैन तथा स्थानीय विद्वान पण्डित मनोजी शास्त्री, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री, पण्डित शशांकजी शास्त्री द्वारा कराये गये।

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर स्वामी जिनालय में श्री पंचबालयति जिनवेदी के पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ पर दिनांक 12 से 17 जनवरी तक पंच बालयतियों के पांच विधानों का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं स्थानीय विद्वानों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं विद्या निकेतन के विद्यार्थियों के सहयोग से पूर्ण हुये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912,
E-Mail - info@vitragvani.com

भक्तामर विधान संपन्न

रायपुर (छत्तीसगढ.) : यहाँ मालवीय रोड़ स्थित श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में दिनांक 10 जनवरी 2016 को भक्तामर विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला। विधान का आयोजन श्री अरविन्दजी बटाबिया परिवार रायपुर द्वारा किया गया।

आगामी कार्यक्रम...

(1) चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम आदीश्वरम् के तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 3 फरवरी को समन्वयवाणी फाउन्डेशन द्वारा प्रवर्तित अहिंसा व शाकाहार के लिये उल्लेखनीय योगदान हेतु श्रीमती सरोज पाटनी पटना को **'अहिंसा मित्र'**, सुप्रसिद्ध साहित्यकार कथालेखक श्री सुरेशजी 'सरल' जबलपुर को **'साहित्य मनीषी'** एवं प्रबुद्ध लेखक व चिन्तक श्री कुन्दनलालजी भारतीय चन्देरी को **'चन्देरी गौरव'** अवार्ड से सम्मानित किया जायेगा। आशा से जुड़े समस्त कार्यकर्ताओं से पधारने का अनुरोध है।

- अखिल बंसल (राष्ट्रीय संचालक -आशा)

(2) नागपुर (महा.) में इतवारी स्थित श्री वीतराग-विज्ञान भवन में दिनांक 11 से 14 फरवरी तक श्री पंच बालयति वेदी के प्रथम वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभ लें।

शोक समाचार

(1) बीकानेर (राज.) निवासी श्री जिनेन्द्र कुमार जैन की धर्मपत्नी **सरोजदेवी जैन** का दिनांक 4 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) अंतरिक्ष पार्श्वनाथ-शिरपुर (महा.) निवासी एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनंतकुमार विश्वंभर शास्त्री के अग्रज **श्री रविकुमार बबनराव विश्वंभर** का दिनांक 2 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक अल्प आयु में ही देहावसान हो गया। आप अत्यंत उत्साही एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान व जैनपथप्रदर्शक हेतु 251-251/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक **बाळापूर (आखाड़ा-नांदेड़)** निवासी पण्डित विकास कंधारकर के अग्रज **श्री विनोद कंधारकर** का दिनांक 6 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक 32 वर्ष की अल्प आयु में ही देहावसान हो गया। आप स्थानीय नगरपालिका के पार्षद थे व सामाजिक कार्यों में अत्यंत सक्रिय थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान मराठी एवं हिन्दी हेतु 251-251/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) जयपुर (राज.) निवासी **श्री माणकचंदजी टोडरका** का दिनांक 27 जनवरी को 95 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जयपुर जैन समाज के अत्यंत सक्रिय युवा कार्यकर्त्ता श्री योगेशजी टोडरका के पिताजी थे तथा अत्यंत सरल स्वभावी एवं धार्मिक परिणामों वाले थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2016

प्रति

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.;
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल;** प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com